وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوٓا إِلَّآ أَن يَشَآءَ اللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿111﴾

१११. और अगर हम उन के पास फ़रिश्ते उतार दें और उन से मुर्दे बात करें और उन के सामने हर चीज जमा कर दें तो (भी) अल्लाह के चाहे बिना यह लोग यक़ीन नहीं करेंगे, लेकिन इन में से ज़्यादातर लोग बेवक़ूफ़ी कर रहे हैं।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَٰطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿112﴾

११२. और इसी तरह हम ने हर नबी (उपदेशक) के लिये जिन्नों और इन्सानों के शैतानों (राक्षसों) को दुश्मन बनाया[1] जो आपस में धोखा देने के लिये चिकनी-चुपड़ी बात का वसवसा देते रहे और अगर तेरा रब चाहता तो ऐसा न करते। इसलिए आप उन्हें और उन की साजिश को छोड़ दें (उनकी फ़िक्र न करें)।

وَلِتَصْغَىٰٓ إِلَيْهِ أَفْـِٔدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ﴿113﴾

११३. और ताकि उन के दिल उस की तरफ़ मायेल हो जायें जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और उस से ख़ुश हो जायें और वही गुनाह कर लें जो वह लोग कर रहे थे।[2]

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِيٓ أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَٰبَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ الْكِتَٰبَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿114﴾

११४. तो क्या मैं अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे शासक की खोज करूँ जब कि उसी ने तुम्हारी तरफ़ एक मुफ़स्सल किताब (क़ुरआन) उतारा है, और हम ने जिन को किताब दिया है वे जानते हैं कि हक़ीक़त में वह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ है, इसलिए आप शक करने वाला न बनें।[3]

[1] यह वही बात है जो कई तरह से रसूलुल्लाह ﷺ की तसल्ली के लिए कही गयी है कि आप ﷺ से पहले जितने भी नबी आये, उनको भी झुठलाया गया, उन्हें सज़ायें दी गई इत्यादि (वग़ैरह)। मक़सद यह है कि जिस तरह से उन्होंने सब्र और हिम्मत से काम किया, आप ﷺ भी इन सच के दुश्मनों के लिए सब्र और मज़बूती का प्रदर्शन (इज़हार) करें। इस से मालूम हुआ कि शैतान के पैरोकार इंसान के सिवाय जिन्नों में से भी हैं और ये वे हैं जो दोनों गुटों के दुश्मन, विद्रोही, ज़ालिम, दुराचारी और अभिमानी (मुतकब्बिर) हैं।

[2] यानी शैतान के बुरे इरादे के शिकार वही लोग होते हैं, जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और यह सच है कि जिस तरह से लोगों के दिलों में आख़िरत का यक़ीन कमज़ोर होता जा रहा है, उसी के अनुरूप (मुताबिक़) लोग शैतानी जाल में फंस रहे हैं।

[3] आप ﷺ को मुख़ातब करके हक़ीक़त में मुसलमानों को तालीम दी जा रही है।

११५. और तुम्हारे रब के कलाम सच्चे क़ौल और इंसाफ़ में पूरा हो गये, उस के कलाम को कोई बदल नहीं सकता और वह अच्छी तरह सुनने वाला जानने वाला है।	وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿115﴾
११६. और यदि आप धरतीवासियों में ज़्यादातर की पैरवी करेंगे तो वह आप को अल्लाह के रास्ते से बहका देंगे, वे सिर्फ़ बेबुनियाद ख़्याल (कल्पना) की पैरवी करते और अंदाज़ा लगाते हैं।[1]	وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿116﴾
११७. बेशक आप का रब उन को अच्छी तरह जानता है, जो उस के रास्ते से भटक जाता है, और वह उस को भी अच्छी तरह जानता है, जो उस के रास्ते पर चलते हैं।	إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿117﴾
११८. तो जिस (जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया जाये उस में से खाओ अगर तुम उस के हुक्मो पर ईमान रखते हो।[2]	فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿118﴾

---

[1] क़ुरआन में बयान इस सच्चाई का अवलोकन (मुशाहदा) हर दौर में किया जा सकता है, दूसरी जगह पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ﴾

"आप की मर्ज़ी के बावजूद ज़्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं।" (सूर: यूसुफ़-१०३)

इस से मालूम हुआ कि सच और सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले हमेशा थोड़े ही होते हैं, जिस से यह बात भी साबित होती है कि सच और सच्चाई की बुनियाद दलील और सुबूत है, लोगों की ज़्यादा या कम तादाद नहीं, ऐसा नहीं कि जिस बात को ज़्यादा लोगों ने माना हो वह सच हो और कम लोग सच्चाई पर न हों, बल्कि क़ुरआन के ज़रिये इस सच्चाई की बुनियाद पर यह मुमकिन है कि सच्चे लोग कम होते हों और झूठे लोग बहुत। जिसकी तसदीक़ हदीस से होती है जिस में नबी ﷺ ने फ़रमाया है: मेरे पैरोकार ७३ गुटों में बट जायेंगे, जिन में से केवल एक ही गुट जन्नत में जायेगा बाक़ी सभी जहन्नम में जायेंगे, और इस जन्नत में जाने वाले गुट की निशानियाँ बतायीं कि जो «مَا أَنَا عَلَيْهِ وَأَصْحَابِي» "मेरे और मेरे सहाबा के रास्ते पर चलने वाला होगा।" (अबू दाऊद, किताबुस-सुन्न: बाब शरह अस-सुन्न: नं॰ ४५९६, तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब माजाअ फ़ी इफ़तराक़ हाज़ेहिल-उम्म:)

[2] यानी जिस जानवर को शिकार करते वक़्त, या क़ुर्बानी, या ज़िब्ह करते वक़्त अल्लाह का नाम लिया जाये उसे खा लो, अगर वे उन जानवरों में से हों जिन को खाने की इजाज़त है, इसका मतलब यह हुआ कि जिस जानवर पर जानबूझ कर अल्लाह का नाम न लिया जाये, वे हलाल और पाक नहीं हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया : «سَمُّوا عَلَيْهِ أَنتُم وَكُلُوا» (सहीह बुख़ारी बाब ज़बीहतुल-आराब नं॰ ५५०७) तुम अल्लाह का नाम लेकर खा लो, शक की हालत में यह छूट है, इसका

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿119﴾

११९. और तुम्हारे लिये कौन सी बात इस का सबब हो सकती है कि तुम ऐसे जानवरों में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो? अगरचे अल्लाह (तआला) ने उन सभी जानवरों की तफ़सील बता दी है जिन को तुम पर हराम किया गया है, लेकिन वह भी जब तुम को बहुत जरूरत पड़ जाये (तो जायेज है) और यह तय बात है कि बहुत से इंसान अपने गलत इरादों पर विना किसी सुबूत के भटकाते हैं, इस में कोई शक नहीं कि अल्लाह (तआला) ज़्यादती करने वालों को अच्छी तरह जानता है।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿120﴾

१२०. तुम खुले और छिपे गुनाहों को छोड़ दो, बेशक जो गुनाह कमाते हैं वे अपने गुनाह करने का बदला क़रीब में ही दिये जायेंगे।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿121﴾

१२१. और उसे न खाओ जिस जानवर पर (जिब्ह के वक़्त) अल्लाह का नाम न लिया गया हो और यह (कर्म) फ़िस्क़ का है,[1] और शैतान अपने दोस्तों को वसवसा देते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें और अगर तुम ने उनकी इताअत की तो तुम बेशक मुश्रिक हो जाओगे।

أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ

१२२. और ऐसा इंसान जो पहले मुर्दा रहा फिर हम ने उसे ज़िन्दा कर दिया और उस के लिये नूर बना दिया जिस से लोगों में चलता है क्या उस के समान हो सकता है जो अंधेरों में हो जिन से निकल न सकता हो ?[2] ऐसे ही काफ़िरों

यह मतलब नहीं कि हर तरह के जानवरों का मांस बिस्मिल्लाह पढ़ लेने से जायेज हो जायेगा, इस से ज़्यादा से ज़्यादा यह साबित होता है कि मुसलमानों की मंडियों और दूकानों पर मिलने वाला गोश्त हलाल है, अगर किसी को शक और शुब्हा हो तो वह खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

[1] यानी जानबूझ कर अल्लाह का नाम जिस जानवर पर न लिया गया हो उसका खाना फ़िस्क़ और नाजायेज है। हज़रत इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) ने इस के यही माने बयान किये हैं, वह कहते हैं कि "जो भूल जाये उसे नाफ़रमान नहीं कहते हैं।"

[2] इस आयत में अल्लाह तआला ने काफ़िर को मृतक (मरा हुआ) और ईमानवालों को ज़िन्दा

مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿122﴾

(अधर्मियों) के लिये जो वे अमल करते हैं सुशोभित (मुज़य्यन) बना दिये गये हैं।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿123﴾

१२३. और इसी तरह हम ने हर बस्ती के बड़े मुजरिमों को साज़िश रचने के लिये बनाया ताकि उस में साज़िश रचे और वह अपने ख़िलाफ़ ही साज़िश रचते हैं और इस का संवेदन (इदराक) नहीं कर पाते।

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِندَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿124﴾

१२४. और जब उन के पास कोई आयत आई तो उन्होंने कहा कि हम कभी यक़ीन नहीं करेंगे जब तक हमें भी उसी के बराबर न दी जाये जो अल्लाह के रसूलों को दी गई, अल्लाह अच्छी तरह जानता है कि वह अपना रिसालत कहाँ रखे,[1] जल्द ही जो गुनाह किये हैं उन्हें अल्लाह के पास से ज़लील होना है और जो साज़िश करते रहे उस का बदला बहुत बड़ा अज़ाब है।

فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿125﴾

१२५. जिन को अल्लाह सच्चा रास्ता दिखाना चाहता है उस के सीने को इस्लाम (दीन) के लिये खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहता है उस के सीने को और तंग कर देता है जैसे कि वह आसमान में चढ़ रहा हो,[2] इसी तरह अल्लाह उनको नापाक बना देता है जो ईमान नहीं रखते।

कहा है, इसलिए कि काफ़िर कुफ़्र की ज़िल्लत के अंधेरे में भटकता फिरता है और उस से निकल ही नहीं पाता जिसका नतीजा मौत और तबाही है और ईमानवाले का दिल अल्लाह पर ईमान से ज़िन्दा रहता है, जिस से उसकी ज़िन्दगी के रास्ते नूरानी हो जाते हैं।

[1] यानी यह फ़ैसला करना कि किस को नबी बनाया जाये? यह तो अल्लाह का काम है क्योंकि वही हर बात की अहमियत और फ़ज़ीलत को जानता है और उसे ही मालूम है कि कौन इस पद का हक़दार है? मक्का का कोई चौधरी और धनवान या हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत आमिना का यतीम बेटा?

[2] यानी जिस तरह ताक़त लगाकर आसमान पर चढ़ना नामुमकिन है, उसी तरह से जिस इंसान के सीने को अल्लाह तआला तंग कर दे, उस में तौहीद (एकेश्वरवाद) और ईमान का दाख़िल होना मुमकिन नहीं है उस के सिवाय कि अल्लाह ही उसका सीना इस के लिए खोल दे।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿126﴾

१२६. यह तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है, हम ने आयतों का तफ़सीली बयान उस क़ौम के लिये कर दिया है जो नसीहत हासिल करते हैं।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿127﴾

१२७. इन्हीं के लिये उन के रब के यहाँ सलामती का घर है और वही उन के अच्छे अमल के सबब उन का दोस्त है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿128﴾

१२८. और जिस दिन (अल्लाह) इन सभी को जमा करेगा (और कहेगा) हे जिन्नों के गिरोह! तुम ने इन्सानों में से बहुत अपना लिया और इंसान में से उन के दोस्त कहेंगे, हे हमारे रब हमें आपस में फ़ायेदा पहुँचा, और हम तेरे मुक़र्रर वक़्त को जो तूने हमारे लिये मुक़र्रर किया जा पहुँचे, (अल्लाह) कहेगा कि तुम्हारी जगह जहन्नम है जिस में तुम हमेशा रहोगे, लेकिन जो अल्लाह चाहे[1] बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है।

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿129﴾

१२९. इसी तरह हम ज़ालिमों को उन के बुरे काम के सबब आपस में दोस्त बना देते हैं।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ

१३०. हे जिन्नों और इन्सानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आये,[2] जो तुम्हारे सामने हमारी आयतें पढ़ते रहे हों और तुम्हें इस (क़यामत) के दिन का सामना करने से बाख़बर करते रहे हों। वे कहेंगे कि हम अपने

[1] और अल्लाह का फ़ैसला काफ़िरों के लिए जहन्नम का दायमी अज़ाब ही है जिस को उस ने लगातार क़ुरआन करीम में वाज़ेह तौर से बयान किया है, छूट से किसी तरह का ग़लत अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए क्योंकि यह छूट अल्लाह तआला ने ख़ुद अपनी मर्ज़ी से बयान किया है, इसे किसी दूसरी चीज़ के साथ शामिल नहीं किया जा सकता, इसलिए कि अगर वह काफ़िरों को जहन्नम से निकालना चाहे तो निकाल सकता है, इस से वह मजबूर भी नहीं है और न कोई दूसरा रोकने वाला है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2] रिसालत और नुबूवत के बारे में जिन्नात इंसानों के अधीन (तावे) हैं, क्योंकि जिन्नातों में नबी नहीं आये हैं, लेकिन रसूलों के संदेशवाहक और ख़ुशख़बरी पहुँचाने वाले जिन्नातों में होते रहे हैं, जो अपनी क़ौम के जिन्नों को अल्लाह की ओर दावत देते रहे हैं।

ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا وَشَهِدُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا۟ كَٰفِرِينَ ﴿130﴾

खिलाफ़ गवाह हैं, और दुनियावी ज़िन्दगी ने उन्हें धोखा दिया और अपने ख़िलाफ़ गवाह होंगे कि वह काफ़िर थे।[1]

ذَٰلِكَ أَن لَّمْ يَكُن رَّبُّكَ مُهْلِكَ ٱلْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَٰفِلُونَ ﴿131﴾

१३१. (रसूल भेजे गये) क्योंकि तुम्हारा रब किसी गाँव वाले को किसी जुल्म के सबब तबाह नहीं करता जब कि उस के रहने वाले गाफ़िल हों।

وَلِكُلٍّ دَرَجَٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوا۟ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَٰفِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿132﴾

१३२. और सब के लिये उस के अमल के ऐतबार से कई दर्जे हैं और तुम्हारा रब उन अमल से ग़ाफ़िल नहीं जो वह कर रहे हैं।

وَرَبُّكَ ٱلْغَنِىُّ ذُو ٱلرَّحْمَةِ ۚ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنۢ بَعْدِكُم مَّا يَشَآءُ كَمَآ أَنشَأَكُم مِّن ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ ءَاخَرِينَ ﴿133﴾

१३३. और तुम्हारा रब बेनियाज़ रहम करने वाला है, अगर चाहे तो तुम्हारा नाश कर दे और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह पर रख दे जैसे तुम्हें एक दूसरी क़ौम के वंश में पैदा किया है।

إِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَءَاتٍ ۖ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿134﴾

१३४. जिस चीज के लिए तुम को वादा दिया जाता है, वह बेशक आने वाली चीज है, और तुम मजबूर नहीं कर सकते।[2]

قُلْ يَٰقَوْمِ ٱعْمَلُوا۟ عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّى عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُ لَهُۥ عَٰقِبَةُ ٱلدَّارِ ۗ إِنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿135﴾

१३५. आप कहिये कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह पर अपना अमल करते रहो, मैं भी (अपनी जगह पर) कर रहा हूँ,[3] तुम्हें जल्द ही इल्म हो जायेगा कि किस का अंजाम इस दुनिया के बाद (अच्छा) होता है, बेशक ज़ालिम कभी भी कामयाब नहीं होंगे।

---

[1] क़यामत के मैदान में मुशरिक अनेक पैंतरे बदलेंगे, कभी अपने मुशरिक होने का इंकार करेंगे (अल-अंआम, २३) और कभी क़ुबूल किये बिना चारा नहीं होगा, जैसे यहाँ उनकी क़ुबूलियत का बयान किया गया है।

[2] इस से मुराद क़यामत (प्रलय) है। "और तुम मजबूर नहीं कर सकते" का मतलब है कि वह तुम्हें फिर से ज़िन्दा करने की ताक़त रखता है, चाहे तुम मिट्टी के कण-कण में मिल जाओ।

[3] यह कुफ़ और नाफ़रमानी पर बाक़ी रहने का हुक्म नहीं है, बल्कि सख़्त तंबीह है, जैसाकि अगले लफ़्ज़ों से वाज़ेह है।

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (136)

१३६. और अल्लाह ने जो खेती और जानवर पैदा किये, उन्होंने उन में से कुछ हिस्सा अल्लाह का बना दिया और अपने विचारानुसार कहा कि यह अल्लाह का है और यह हमारे देवताओं का,[1] फिर जो हमारे देवताओं का (हिस्सा) है वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता और जो अल्लाह का है वह उन के देवताओं तक पहुँचता है,[2] वे बुरा फ़ैसला दे रहे हैं।

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۖ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ (137)

१३७. और इसी तरह बहुत से मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) के लिये उन के देवताओं ने उनको तबाह करने और उन पर उन के दीन को मुश्तब: बनाने के लिये उनकी औलाद के क़त्ल को सुसज्जित बना दिया है,[3] और अगर अल्लाह चाहता तो वह यह नहीं करते, इसलिए आप इन को और इन के मनघड़त को छोड़ दीजिये।

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۗ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (138)

१३८. और उन्होंने कहा कि यह जानवर और खेती हराम है, इसे वही खायेगा अपने इरादे से हम जिसे चाहेंगे और कुछ जानवर की पीठ (यानी सवारी) हराम है[4] और कुछ जानवर पर (जिब्ह करते वक़्त) अल्लाह का नाम नहीं लेते अल्लाह

---

[1] इस आयत में मूर्तिपूजकों के उस ईमान और अमल की मिसाल पेश की जा रही है जो उन्होंने ख़ुद गढ़ लिये थे, वह खेती की पैदावार और जानवरों में से कुछ हिस्सा अल्लाह के लिए और कुछ हिस्सा झूठ और मनगढ़न्त देवताओं के नाम पर निकाल देते थे, अल्लाह के हिस्से को मेहमानों, फ़क़ीरों और रिश्तेदारों पर ख़र्च करते, फिर अगर मूर्तियों के हिस्से में अनुमानित पैदावार न होती तो अल्लाह के हिस्से को निकाल कर उस में शामिल कर लेते और अगर उन के ख़िलाफ़ घटता तो मूर्तियों के हिस्से से न निकालते और कहते कि अल्लाह तो बेनियाज़ है।

[2] अगर मूर्तियों के मुक़र्रर: हिस्सा में कमी होती तो वह अल्लाह के मुक़र्रर: हिस्सा में से लेकर मूर्तियों की ज़रूरतों पर ख़र्च कर लेते, यानी अल्लाह के सामने मूर्तियों का डर उन के दिलों में ज़्यादा था जिस को आज के मूर्तिपूजकों के अमल से भी देखा जा सकता है।

[3] यह इशारा उन की बच्चियों (बालिकाओं) को ज़िन्दा गाड़ देने या मूर्तियों की क़ुर्बानी के तौर पर नज़र चढ़ाने की तरफ़ है।

[4] यह दूसरी शक्ल है कि वह कई तरह के जानवरो को मूर्तियों के नाम पर आज़ाद कर देते जिन से सामान ढोने या सवारी का काम नहीं लेते जैसे कि «बहीर:» और «साएब:» वग़ैरह का तफ़सीली बयान पहले आ चुका है।

पर झूठ बांधने के लिये,[1] अल्लाह उन्हें उन के इल्ज़ाम का बदला जल्द देगा।

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ (139)

१३९. और उन्होंने कहा कि इन जानवरों के गर्भ में जो है वह ख़ास तौर से हमारे मर्दों के लिये है और हमारी बीवियों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सभी उस में हिस्सेदार हैं[2] वह (अल्लाह) उन के इस क़ौल का बदला जल्द देगा, बेशक वह हिक्मत वाला जानने वाला है।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ (140)

१४०. वे नुक़सान में पड़ गये जिन्होंने बिना इल्म के बेवक़ूफ़ी के सबब अपनी औलाद को क़त्ल किया और अल्लाह ने जो रोज़ी अता की उसे हराम कर लिया अल्लाह पर झूठ बांधने के सबब, वे गुमराह हो गये और सच्चे रास्ते पर नहीं रह गये।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ

१४१. वही है जिसने लताओं और बिन लताओं के बाग़ात पैदा किये[3] और खजूर और खेतियां जिन के ज़ायक़े कई तरह के हैं, और ज़ैतून और अनार एक तरह और अनेक तरह। जब फल लायें तो तुम इन को खाओ और उसकी कटाई के

---

[1] यह तीसरी शक्ल है कि वह ज़िब्ह करते वक़्त सिर्फ़ मूर्तियों का नाम लेते, अल्लाह का नाम नहीं लेते, कुछ ने इस का मतलब यह लिया है कि इन जानवरों पर सवार होकर वह "हज" के लिये नहीं जाते थे, जो भी हो यह सब उनकी ख़ुद गढ़ी बातें थीं जिन्हें वह अल्लाह का हुक्म साबित करना चाहते थे।

[2] यह एक दूसरी शक्ल है कि जो जानवर वह अपनी मूर्तियों के नाम सदक़ा कर देते थे, इन में से कुछ के बारे में कहते थे कि इन का दूध और उन के गर्भ से जो पैदा होने वाला ज़िन्दा बच्चा हमारे मर्दों के लिए हलाल है, औरतों के लिए हराम है, हाँ अगर बच्चा मरा हुआ पैदा होता है तो उस के खाने में औरत और मर्द बराबर हैं।

[3] مَعْرُوشَات (मअरूशात) का मस्दर (अर्श) है, जिसका मतलब बुलन्द करना और ऊपर उठाने के हैं, मुराद कुछ पेड़ों की लतायें हैं जो ऊपर (छप्पर छतों वग़ैरह पर) चढ़ाई जाती हैं, जैसे अंगूर और कुछ तरकारियों की लतायें हैं, लेकिन कुछ लतायें जो ऊपर नहीं चढ़ाई जाती हैं, बल्कि धरती पर ही फलती-फूलती हैं, जैसे खरबूज़े और तरबूज़े वग़ैरह की लतायें है।

كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۖ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ (141)

दिन उसका हक़ अदा करो[1] और इस्राफ़ न करो, बेशक अल्लाह इस्राफ़ करने वालों से मुहब्बत नहीं करता।[2]

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۚ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ (142)

१४२. और जानवरों में कुछ बोझ लादने के लायक़ और कुछ ज़मीन से लगे हुये बनाया। खाओ, जो तुम्हें अल्लाह ने दिया है और शैतान के क़दमों के निशान की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۖ مِّنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ (143)

१४३. वह आठ तरह के जोड़े (बनाये)[3] भेड़ में दो, बकरी में दो,[4] आप कहिये कि अल्लाह ने दोनों के नर को हराम किया है या दोनों की मादा को? या उस को जो दोनों मादा के गर्भाशय (रिहम) में शामिल है? मुझे इल्म के साथ बताओ अगर सच्चे हो।

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنتُمْ شُهَدَاءَ

१४४. और ऊँट में दो और गाय में दो, आप कहिए कि क्या अल्लाह ने दोनों मादा को या दोनों नरों को हराम किया है? या उसको जिस पर दोनों मादा के रिहम शामिल हो। क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने इस का

---

[1] यानी जब खेत से अनाज काट कर साफ कर लो, और पेड़ से फल तोड़ लो, तो उसका हक़ अदा करो, इस से मुराद कुछ आलिमों के नजदीक अपनी मर्जी से सदक़ा है, कुछ के नजदीक जरूरी सदक़ा या दसवाँ हिस्सा (तराई की जमीन की पैदावार हो) या बीसवाँ हिस्सा (अगर जमीन कुऐं, ट्यूब वेल या नहर के पानी से सींची जाती हो)

[2] इसलिए इस्राफ़ किसी भी चीज में अच्छा नहीं है, दान-पुण्य (सदक़ा-ख़ैरात) के काम में या दूसरे किसी काम में, हर काम में औसत और हुदूद के भीतर ताक़त के ऐतबार से जायेज और अच्छा है और इसी पर जोर दिया गया है।

[3] यानी «उसी अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किये» इस आयत में «अज़वाज» लफ़्ज का इस्तेमाल हुआ है, जो «जौज» का बहुवचन है, एक ही जाति के नर और मादा को «जौज» कहते हैं और उन दोनों में से सब को भी «जौज» कह लिया जाता है, क्योंकि हए एक-दूसरे का «जौज» होता है। क़ुरआन में इस जगह पर भी «अज़वाज» हर एक के लिए ही इस्तेमाल हुआ है यानी आठ जानवर अल्लाह ने पैदा किये जो आपस में एक-दूसरे के जोड़े हैं, यह नहीं कि आठ जोड़े पैदा किये, इस तरह से उनकी तादाद १६ हो जायेगी जो आयत के अगले हिस्से के ऐतबार से ठीक नहीं है।

[4] यह आठ की तकमील है, और मुराद दो तरह से नर और मादा है, यानी भेड़ से नर और मादा और बकरी से नर-मादा पैदा किये। (भेड़ में दुम्बा भी शामिल है)

إِذْ وَصَّاكُمُ اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (144)

हुक्म किया? फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाये[1] ताकि बिना किसी इल्म लोगों को गुमराह बना दे। बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।

قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (145)

१४५. आप कहिये कि मुझे जो हुक्म किया गया है उस में किसी खाने वाले के लिये कोई खाना हराम नहीं पाता, लेकिन यह कि वह मुर्दा हो या बहता ख़ून या सूअर का गोश्त, इसलिये कि वह बिल्कुल नापाक है या जो शिर्क का कारण हो जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरों का नाम पुकारा गया हो,[2] फिर जो कोई मजबूर हो, जब कि बाग़ी और हद से बाहर जाने वाला न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ (146)

१४६. और हम ने यहूदियों पर नाख़ून वाले जानवर हराम कर दिये और गाय व बकरी की चर्बी उन पर हराम कर दी, लेकिन जो दोनों की पीठ और आंतों में हो या जो किसी हड्डी से लिपटी हो, हम ने यह उन के (दीन) बग़ावत का बदला दिया और हम सच्चे हैं।

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ (147)

१४७. अगर वह आप को झुठलायें तो कहिये कि तुम्हारे रब (अल्लाह) की रहमत बहुत वसीअ है, और उस का अज़ाब मुजरिमों से फेरा नही जाता।

---

[1] यानी यही सब से बड़ा ज़ुल्म है, हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने अम्र बिन लुहैयी को जहन्नम में आंत खींचते हुए देखा, उस ने सब से पहले मूर्तियों के नाम पर वसीला और «हाम» वग़ैरह जानवर छोड़ने का सिलसिला शुरू किया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: मायेद:, मुस्लिम किताबुल जन्न:)

[2] इस आयत में जिन चार हराम चीज़ों का बयान है, उसका सूर: बक़र: की आयत-१७३ की तफ़सीर में तफ़सील से बयान हो चुका है।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَیْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ (148)

१४८. मुश्रिक कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बुजुर्ग शिर्क नहीं करते, न किसी चीज को हराम बनाते, इसी तरह इन से पहले के लोग झुठलाये यहां तक कि हमारा अजाब चख लिये, कहिये कि क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है तो उसे हमारे लिये निकालो (जाहिर करो), तुम कल्पना (गुमान) की पैरवी करते हो और सिर्फ अंदाजा लगाते हो।

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ (149)

१४९. आप कहिये कि फिर अल्लाह ही की दलील प्रभावशाली (ग़ालिब) है, इसलिए अगर वह चाहे तो तुम सभी को हिदायत दे सकता है।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ (150)

१५०. आप कहिये कि अपने उन गवाहों को लाओ जो यह गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दें तो आप उन के साथ गवाही न दें और उनकी मनमानी इरादों की इत्तेबा न करें और जिन्होंने हमारी आयतों को झूठा कहा और जो आखिरत पर यकीन नहीं करते और (दूसरों को) अपने रब की तरह मानते हैं।

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ

१५१. आप कहिये कि आओ मैं पढ़कर सुनाऊं कि तुम को तुम्हारे रब ने किस से मना किया है,[1] वह ये कि उस के साथ किसी चीज का शिर्क न करो, और मां-बाप के साथ एहसान करो,[2] और अपनी औलाद को ग़रीबी के सबब

---

[1] यानी हराम वह नहीं है जिन को तुम ने बिना दीनी सुबूत के सिर्फ अपने झूठे शक और शुब्हा की बिना पर हराम बना दिया है, बल्कि हराम तो वह चीज है जिस को तुम्हारे रब ने हराम किया है, क्योंकि तुम्हारा जन्मदाता तो तुम्हारा रब है और हर चीज का उसी को ही इल्म है, इसलिए उसी को यह हक है कि वह जिस चीज को चाहे हलाल (उचित) और जिस चीज को चाहे हराम (अनुचित) करे, इसलिए मैं तुम्हें उन बातों की तफ़सीली जानकारी देता हूं, जिनकी तंबीह तुम्हारे रब ने की है।

[2] अल्लाह तआला के एक होने और उस के हुक्म की पैरवी करने के बावजूद यहां भी (और कुरआन में दूसरे मुकाम पर भी) मां-बाप के साथ दया-भाव (हुस्ने सुलूक) करने का हुक्म

وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿151﴾

कत्ल न करो, हम तुम को और उन को रोजी अता करते हैं[1] और जाहिर व छुपी फहाशी के करीब न जाओ और उस जान को जिस से अल्लाह ने मना किया है कत्ल न करो, लेकिन वैधानिक (शरई) कारण से,[2] तुम को उस ने इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम समझो।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿152﴾

१५२. और यतीम के माल के करीब न जाओ, लेकिन बहुत अच्छे ढंग से यहां तक कि वह बुलूगत को पहुंचे,[3] और इंसाफ के साथ नाप और तौल पूरा करो,[4] हम किसी पर उस की ताकत से ज़्यादा बोझ नहीं रखते, और जब बोलो तो इंसाफ करो, अगरचे वह करीबी रिश्तेदार हो, और अल्लाह से किया वादा पूरा करो, उस ने तुम लोगों को इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम याद रखो।

दिया गया है, जिससे यह वाजेह होता है कि रब के हुक्म की पैरवी के बावजूद मां-बाप के हुक्म की पैरवी की बड़ी फजीलत है, अगर किसी ने इस हुक्म (मां-बाप के हुक्म की पैरवी और उन से हुस्ने सुलूक करने) की जरूरतों को पूरा नहीं किया तो वह अल्लाह के हुक्म की पैरवी भी नहीं कर सकता और उस में भी नाकाम रहेगा।

[1] जाहिलियत के दौर का यह बहुत खराब काम आज भी परिवार नियोजन के शक्ल में मौजूद है और पूरी दुनिया में इस के प्रचार-प्रसार का काम हो रहा है, अल्लाह तआला इससे महफूज रखे।

[2] यानी बदले के तौर पर न सिर्फ जायेज है, बल्कि अगर मरने वाले के रिश्तेदार माफ न करें तो यह कत्ल बहुत जरूरी हो जाता है।

[3] जिस यतीम का संरक्षण (किफालत) तुम्हारे हक में आये, उस के लिए अच्छा सोचना तुम्हारा फर्ज है, इसकी भलाई के लिए जरूरी है कि अगर उस के पास माल है यानी विरासत में से उस का हिस्सा मिला है चाहे नगद हो या जमीन-जायदाद के रूप में, अगर उस वक्त वह उसको महफूज रखने में कामयाब न हो तो उस के माल की उस वक्त तक बगैर किसी लालच से हिफाजत की जाये जब तक कि वह बुलूगत को न पहुंच जाये, यह न हो कि उस के बालिग होने से पहले उसके माल, जमीन और जायदाद को ठिकाने लगा दिया जाये।

[4] नाप-तौल में कमी करना, लेते वक्त तो पूरा नाप-तौल से लेना, लेकिन देते वक्त ऐसा न करना, बल्कि डंडी मारकर दूसरों को कम देना, यह बहुत नीच और सभ्यता (तहजीब) से गिरी हुई बात है, जनाब शुऐब की कौम में यही रोग था, जो उन की तबाही का सबब बना।

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿153﴾

१५३. और यही[1] मेरा सीधा रास्ता है[2] इसलिए उसी पर चलो और दूसरे रास्ते पर न चलो नहीं तो तुम्हें उस के रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम को इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम महफ़ूज रहो।

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُم بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿154﴾

१५४. फिर हम ने (रसूल) मूसा को किताब दी, उस पर नेमत पूरी करने के लिये जिस ने नेक अमल किया और हर चीज की तफ़सील और हिदायत और रहमत के लिये[3] ताकि वे अपने रब से मिलने पर यक़ीन करें।

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿155﴾

१५५. और यह (पाक क़ुरआन) एक मुबारक किताब है जिसे हम ने उतारा, इसलिए तुम इस की इत्तेबा करो ताकि तुम पर रहम (दया) किया जाये।

أَن تَقُولُوا إِنَّمَا أُنزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ مِن قَبْلِنَا وَإِن كُنَّا عَن دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ﴿156﴾

१५६. ताकि यह न कहो कि हम से पहले दो क़ौमों पर किताब (तौरात और इंजील) उतारी गई और हम उनकी तालीम से अंजान (अनभिज्ञ) रहे।

---

[1] "यह" से मुराद क़ुरआन मजीद है या दीन इस्लाम या वे हुक्म जो फ़ज़ीलत से इस आयत में बयान किये गये हैं, और वह है तौहीद, मरने के बाद का नतीजा और रिसालत, और यही दीन इस्लाम के तीन बुनियाद हैं, जिसकी धुरी पर पूरे इस्लामी क़ानून घूमते हैं, इसलिए इस का जो भी मतलब लिया जाये, एक ही मतलब है।

[2] "सीधे मार्ग" को एकवचन (मुफ़रद) के रूप में बयान किया गया है, क्योंकि अल्लाह का या क़ुरआन का, और रसूलुल्लाह ﷺ का रास्ता एक ही है एक से ज़्यादा नहीं, इसलिए पैरवी सिर्फ़ उसी एक रास्ते की करना है किसी दूसरे की नहीं, यही इस्लामी उम्मत की एकता और अखण्डता की बुनियाद है जिस से हट कर यह उम्मत कई गुटों में बँट गयी है।

[3] यह पाक क़ुरआन का अपना अंदाज है कि जिसे कई जगहों पर दोहराया गया है कि जहाँ पाक क़ुरआन की चर्चा होती है वहाँ तौरात की, और जहाँ तौरात की चर्चा हो वहाँ पाक क़ुरआन की भी चर्चा कर दी जाती है।

اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿157﴾

१५७. या तुम यह न कहो कि अगर हम पर किताब नाज़िल होती तो हम उन से ज़्यादा सच्चे रास्ते पर होते तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से वाज़ेह दलील और हिदायत और रहमत आ चुकी है, फिर उस से ज़्यादा पापी कौन है जिस ने अल्लाह की आयतों को झूठा कहा और उन से फिर गया, हम सख़्त अज़ाब अपनी आयतों से फिरने के सबब उन्हें देंगे जो फेर रहे हैं।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿158﴾

१५८. वह फ़रिश्तों के आने का इंतेज़ार कर रहे हैं या अपने रब (अल्लाह) के आने का या आप के रब की कुछ निशानी आने का? जिस दिन तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ जायेगी किसी नफ़्स को उसका ईमान काम न देगा जिस ने उस से पहले ईमान क़ुबूल न किया हो या अपने ईमान में कोई नेक काम न किया हो, आप कहिये कि तुम इंतेज़ार करो हम (भी) इंतेज़ार कर रहे हैं।[1]

اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِىْ شَىْءٍ ۗ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿159﴾

१५९. बेशक जिन्होंने अपना दीन अलग-अलग कर दिया और अनेक धार्मिक सम्प्रदाय (फ़िर्क़ा) बन गये[2] आप का उन से कोई रिश्ता नहीं, उनका फ़ैसला अल्लाह के पास है फिर उन्हें उस से आगाह करेगा जो वह करते रहे हैं।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿160﴾

१६०. जो इंसान अच्छा काम करेगा उसे उस के दस गुना मिलेंगे, और जो बुरे काम करेगा उसे उस के बराबर सज़ा मिलेगी और उन लोगों पर ज़ुल्म न होगा।

---

[1] यह ईमान न लाने वालों और तौबा न करने वालों के लिए तंबीह है, और बाख़बर किया जा रहा है। क़ुरआन करीम में इसी बारे में सूर: मोहम्मद-१८, सूर: मोमिन- ८४ और ८५ में बयान किया गया है।

[2] इस से कुछ लोग यहूदी और इसाई मुराद लेते हैं, जो कई गुटों में बँटे हुए थे, कुछ मूर्तिपूजकों को लेते हैं जिन में कुछ फ़रिश्तों की, कुछ सितारों की, कुछ कई मूर्तियों की पूजा करते थे, लेकिन यह विषय आम है जिन में काफ़िर और मूर्तिपूजकों सहित वे सभी लोग भी शामिल हैं जो अल्लाह के दीन और रसूल ﷺ के रास्ते को छोड़ कर दूसरे दीन अपना कर दूसरे रास्ते अपनाकर इख़्तेलाफ़ और फूट का रास्ता अपनाते है। (फ़तहुल क़दीर)

قُلْ اِنَّنِیْ هَدٰىنِیْ رَبِّیْۤ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۚ دِیْنًا قِیَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿161﴾

१६१. आप कह दीजिए कि मुझे मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बता दिया है कि वह एक मुस्तहकम दीन है जो तरीक़ा है इब्राहीम का, जो अल्लाह की तरफ़ यकसू थे और वह मुश्रिकों में न थे।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿162﴾

१६२. आप कह दीजिए कि बेशक मेरी नमाज़, और मेरी सभी इबादतें और मेरी ज़िन्दगी और मौत सारी दुनिया के रब अल्लाह के लिए हैं।

لَا شَرِیْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿163﴾

१६३. उसका कोई शरीक नहीं, मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं पहला हूँ जिन्होंने सब से पहले उसे माना।

قُلْ اَغَیْرَ اللّٰهِ اَبْغِیْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَیْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَیْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ۚ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿164﴾

१६४. आप कहिये कि क्या मैं अल्लाह के सिवाये किसी दूसरे रब की खोज करूँ जब कि वही हर चीज़ का रब है[1] और कोई नफ़्स जो भी कमायेगा उसी पर होगा कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ दोबारा जाना है, वह तुम्हारे इख़्तेलाफ़ों के बारे में तुम्हें बतायेगा।

وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّیَبْلُوَكُمْ فِیْ مَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِیْعُ الْعِقَابِ ۖؗ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿165﴾

१६५. और उसी ने तुम को धरती में ख़लीफ़ा बनाया और एक के पदों को दूसरे पर बढ़ाया ताकि जो कुछ तुम्हें अता किया उस में तुम्हारा इम्तेहान ले, बेशक तुम्हारा रब जल्द अज़ाब देने वाला है, और बेशक वह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

---

[1] यहाँ रब से मुराद माबूद बनाना है जिसका मूर्तिपूजक इंकार करते रहे हैं, और जो उस के रब होने की माँग है, लेकिन मूर्तिपूजक उस के रब होने को तो मानते थे और उस में किसी को भी साझीदार नहीं ठहराते थे, लेकिन माबूद होने में साझीदार ठहराते थे।

سُورَةُ الأَعْرَافِ

सूरतुल आराफ़-७

सूर: अल-आराफ़ मक्का में उतरी और इस की दो सौ छ: आयतें हैं और चौबीस रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾

१. अलिफ़. लाम. मीम. साद।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

२. यह एक किताब है जो आप की तरफ़ उतारी गई ताकि इस के जरिये बाख़बर करने से आप के दिल में तंगी पैदा न हो और ईमान वालों के लिये शिक्षा है।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾

३. जो (धर्म विधान) आप के रब की तरफ़ से उतारा गया, उसकी इत्तेबा करो और उस के सिवाये दूसरे औलिया की इत्तेबा न करो तुम लोग बहुत कम नसीहत हासिल करते हो।

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾

४. और बहुत सी बस्तियों को हम ने बर्बाद कर दिया और उन पर हमारा अज़ाब रात के वक़्त पहुंचा या ऐसी हालत में कि वे दोपहर के वक़्त आराम कर रहे थे।[1]

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾

५. तो जब उन के पास हमारा अज़ाब आया तो उन की पुकार सिर्फ़ यही रही कि उन्होंने कहा कि हम ही ज़ालिम (पापी) रहे हैं।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾

६. फिर हम उन से ज़रूर पूछ करेंगे जिन के पास पैग़ाम भेजा गया और पैग़म्बरों से ज़रूर पूछ करेंगे।[2]

---

[1] قَآئِلُوْنَ कलिमा "दोपहर के वक़्त खाना खा के आराम करने को कहते हैं।" मतलब यह है कि हमारा अज़ाब अचानक ऐसे वक़्त में आया जब वे बेफ़िक्री से अपने बिस्तरों में आराम कर रहे थे।

[2] उम्मतों से यह पूछा जायेगा कि क्या तुम्हारे पास पैग़म्बर (संदेशवाहक) आये थे? उन्होंने

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿7﴾

७. फिर हम उन के सामने इल्म के साथ बयान कर देंगे और हम बेख़बर नहीं थे।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿8﴾

८. और उस दिन ठीक वज़न होगा फिर जिस का पलड़ा भारी होगा वही कामयाब होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿9﴾

९. और जिस का पलड़ा हल्का होगा, तो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया, इस वजह से कि हमारी आयतों के साथ ज़ुल्म करते रहे थे।[1]

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿10﴾

१०. और हम ने तुम को ज़मीन में रहने का स्थान दिया और उस में तुम्हारे लिये सामाने ज़िन्दगी बनाया, तुम बहुत कम शुक्रिया अदा करते हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۗ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿11﴾

११. और हम ने तुम को पैदा किया, फिर तुम्हारी शक्ल बनाई, फिर हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो सभी ने सज्दा किया सिवाय इब्लीस के, कि वह सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۗ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿12﴾

१२. (अल्लाह ने) कहा कि जब मैंने तुझे सज्दा करने का हुक्म दिया तो किस सबब ने तुझे सज्दा करने से रोक दिया, उस ने कहा मैं इस से अच्छा हूँ, तूने मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से पैदा किया है।[2]

हमारा पैग़ाम पहुँचाया था? वहाँ वे जवाब देंगे, "हाँ, हे अल्लाह! तेरे पैग़म्बर तो बेशक हमारे पास आये थे लेकिन हमारी ही बदनसीबी थी कि हम ने उन की फ़िक्र नहीं की।" और पैग़म्बरों से पूछा जायेगा कि तुम ने हमारा पैग़ाम अपनी उम्मत को पहुँचा दिये और उन्होंने उस के मुक़ाबले में क्या अमल किये? पैग़म्बर इस सवाल का जवाब देंगे जिस का तफ़सीली बयान पाक क़ुरआन में कई जगहों पर मौजूद है।

[1] इन आयतों में अमलों के तौलने का बयान किया गया है, जो क़यामत के दिन होगा, जिसे पाक क़ुरआन में कई जगहों पर और हदीसों में बयान किया गया है।

[2] शैतान का यह उज़्र उस के गुनाह से भी ज़्यादा गुनाह बन गया, एक तो उसका यह सोचना कि अच्छे को अपने से नीचे के इज़्ज़त व एहतेराम का हुक्म नहीं दिया जा सकता, ग़लत है।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿13﴾

१३. (अल्लाह तआला ने) हुक्म दिया कि तू आकाश[1] से उतर, तुझे कोई हक नहीं कि आकाश में रह के घमंड करे, इसलिए निकल, बेशक तू अपमानितों (जलीलों) में से है।[2]

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿14﴾

१४. उस (शैतान) ने कहा कि मुझे (क़यामत तक) मौक़ा अता कीजिए जब लोग दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे।

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿15﴾

१५. (अल्लाह ने) कहा कि तुझे मौक़ा अता कर दिया गया।

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿16﴾

१६. उस (शैतान) ने कहा तेरे मुझ को धिक्कारने के सबब मैं उनके लिये तेरे सीधे रास्ते पर बैठूंगा।

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿17﴾

१७. फिर उन के सामने और पीछे से और दायें और बायें से हमला करूंगा[3] और आप इन में ज़्यादातर को शुक्रगुज़ार नहीं पायेंगे।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَدْحُورًا ۖ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿18﴾

१८. (अल्लाह ने) कहा, तू इस से (यहाँ से) अपमानित (ज़लील व ख़्वार) होकर निकल जा, जो उन में से तेरी इत्तेबा करेगा मैं तुम सभी से जहन्नम को ज़रूर भर दूंगा।

इसलिए कि असल मामला अल्लाह का हुक्म है, उस के हुक्म के आगे अच्छा और कम अच्छा की बात करना अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी है। दूसरे उस ने अपने अच्छे होने की यह दलील दी कि मैं आग से हूँ और यह मिट्टी से है, परन्तु उस ने उस फ़ज़ीलत को अनदेखी कर दिया जो हज़रत आदम को हासिल हुई, यानी अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने हाथ से बनाया और अपनी तरफ़ से रूह फूंकी, इस फ़ज़ीलत के बराबर दुनिया की कोई इज़्ज़त हो सकती है?

[1] ज़्यादातर तफ़सीर निगारों ने "इस से" का माने यह किया है कि उस से यानी जन्नत से निकल जाओ और कुछ ने "इस से" का माने यह लिया है कि आसमान से नीचे उतरो। आदरणीय अनुवादक ने यही दूसरा माने लेकर उसका अनुवाद "आसमान से उतरो" किया है।

[2] अल्लाह के हुक्म के सामने घमण्ड करने वाला इज़्ज़त व एहतेराम का नहीं बल्कि बेइज़्ज़ती और ज़िल्लत का हक़दार होता है।

[3] मतलब यह है कि हर सवाब और गुनाह के रास्ते पर मैं बैठूंगा, अच्छे काम से उन्हें रोकूंगा और गुनाह को उन के सामने अच्छा और ख़ूबसूरत बना कर पेश करूंगा और उनको अपनाने के लिए शिक्षा दूंगा।

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿19﴾

१९. और (हम ने कहा कि) हे आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, फिर जिस जगह से मर्ज़ी हो खाओ, और इस पेड़ के क़रीब न जाओ नहीं तो ज़ालिम हो जाओगे।[1]

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿20﴾

२०. फिर शैतान ने दोनों में वसवसा[2] पैदा किया ताकि दोनों के लिये उन की शर्मगाहों को ज़ाहिर कर दे, और कहा कि तुम दोनों के रब ने तुम्हें इस पेड़ से इसीलिए रोका है कि तुम दोनों फ़रिश्ता हो जाओगे या हमेशा रहने वाले हो जाओगे।

وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿21﴾

२१. उस ने उन दोनों के सामने क़सम खाई कि मैं तुम दोनों का शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह) है।

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۗ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿22﴾

२२. इस तरह धोखे से दोनों को नीचे लाया, जैसे ही दोनों ने पेड़ का ज़ायेका लिया दोनों के लिये उन के गुप्तांग ज़ाहिर हो गये और वे अपने ऊपर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे और उन के रब ने दोनों को पुकारा, कि क्या मैंने तुम दोनों को इस पेड़ से नहीं रोका था? और तुम से नही कहा कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है।[3]

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿23﴾

२३. दोनों ने कहा, हमारे रब! हम ने अपने ऊपर ज़ुल्म कर लिया, और अगर तूने हमें माफ़ नहीं किया और हम पर रहम न किया तो हम नुक़सान उठाने वालों में से हो जायेंगे।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿24﴾

२४. (अल्लाह तआला ने) कहा, तुम नीचे उतरो, तुम आपस में दुश्मन हो और तुम्हें एक वक़्त तक धरती में रहना और फ़ायदेमंद होना है।

---

1 यानी सिर्फ़ इस पेड़ के सिवाये जहां से और जितना चाहो खाओ, इस पेड़ का फल खाने पर रूकावट सिर्फ़ इम्तेहान के तौर पर थी।

2 वसवसा का मतलब है धीमी आवाज़, और वह बुरी बात जो शैतान दिल में पैदा करता है।

3 यानी इस तंबीह के बाद भी तुम शैतान के वसवसों (शंका) के शिकार हो गये, इस से मालूम हुआ कि शैतान के जाल भी बड़े ख़ूबसूरत होते हैं, और उन से बचने के लिए बड़ी कोशिश और हर वक़्त होशियार रहने की ज़रूरत है।

२५. कहा कि तुम उसी में जिन्दगी गुजारोगे और उसी में मरोगे और उसी से निकाले जाओगे।

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ (25)

२६. हे आदम के बेटो! हम ने तुम्हें ऐसा कपड़ा अता किया जो तुम्हारे गुप्तांग (शर्मगाह) को ढांके और जीनत दे,[1] और परहेज़गारी का कपड़ा ही अच्छा है यह अल्लाह की निशानी हैं ताकि वह याद करें।

يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُوَٰرِي سَوْءَٰتِكُمْ وَرِيشًا ۖ وَلِبَاسُ ٱلتَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ (26)

२७. हे आदम के बेटो ! तुम्हें शैतान बहका न दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को जन्नत से निकलवा दिया, वह उन का कपड़ा उतरवा दिया ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखाये, बेशक वह और उस की जाति तुम्हें ऐसी जगह से देखती है कि तुम उन्हें देख नहीं सकते,[2] हम ने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया जो ईमान (विश्वास)[3] नहीं रखते।

يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ كَمَآ أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ ٱلْجَنَّةِ يَنزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْءَٰتِهِمَآ ۗ إِنَّهُۥ يَرَىٰكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُۥ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ إِنَّا جَعَلْنَا ٱلشَّيَٰطِينَ أَوْلِيَآءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ (27)

२८. और वे जब कोई बुराई करते हैं तो कहते हैं कि हम ने अपने पुरखों को इसी पर पाया, और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया है। आप कह दीजिये कि अल्लाह बुराई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात करते हो जिसे तुम नहीं जानते।

وَإِذَا فَعَلُوا۟ فَٰحِشَةً قَالُوا۟ وَجَدْنَا عَلَيْهَآ ءَابَآءَنَا وَٱللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ أَتَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ (28)

---

[1] سَوْآت जिस्म के वह हिस्से हैं जिनको ढांकना जरूरी है, जैसे गुप्तांग और رِيشا वह कपड़ा है जो जीनत और ख़ूबसूरती के लिये पहना जाये, मानो पहला जरूरी कपड़ा है और दूसरा जीनत और इज़ाफ़ा के लिये होता है, अल्लाह ने इन दोनों तरह के लिये जरिया पैदा कर दिये।

[2] इस में ईमानवालों को शैतान और उसकी जाति यानी उस के चेलों से होशियार किया गया है कि कहीं तुम्हारी लापरवाही और सुस्ती से फ़ायेदा उठा कर तुम्हें भी उसी तरह इम्तेहान और बुरे रास्ते में न डाल दे, जिस तरह तुम्हारे मां-बाप (आदम और हव्वा) को उस ने जन्नत से निकलवाया और जन्नत के कपड़े उतरवा दिये, ख़ास तौर से जब वह नजर भी नहीं आते तो उन से बचने का तरीक़ा और फ़िक्र ज़्यादा होनी चाहिए।

[3] यानी जिन में ईमान नहीं है वही उस के दोस्त हैं, और ख़ास तौर से उस के शिकार होते हैं, फिर भी वह ईमानवालों पर भी डोरे डालता रहता है, कुछ और नहीं तो छुपा शिर्क (दिखावे के नेक काम) और खुले शिर्क (मिश्रणवाद) में लीन कर देता है, और इस तरह वह उनको ईमान के पूंजी से महरूम कर देता है।

२९. आप (रसूल) कहिये कि मेरे रब ने मुझे इंसाफ़ का हुक्म दिया है,[1] और हर सज्दा के वक्त अपने चेहरे को सीधी दिशा में कर लो और उस (अल्लाह) के लिये दीन को ख़ालिस कर के उसे पुकारो, उस ने जैसे तुम को शुरू में पैदा किया उसी तरह फिर पैदा होगे।

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۗ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ (29)

३०. और उस (अल्लाह) ने कुछ को हिदायत दी और कुछ गुमराही के मुस्तहिक़ बन गये, उन्होंने अल्लाह के सिवाय शैतानों (असुरों) को अपना दोस्त बना लिया, और सोचते हैं कि वह हिदायत पर हैं।

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۗ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ (30)

३१. हे आदम के बेटो! मस्जिद में जाने के हर वक्त अपना कपड़ा अपना लो[2] और खाओ-पिओ और इस्राफ़ न करो, बेशक जो इस्राफ़ करते हैं अल्लाह उन से मुहब्बत नहीं करता।[3]

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ (31)

३२. (हे रसूल!) आप कहिये कि उस ज़ीनत को किस ने हराम किया है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये पैदा किया है और पाक रिज़्क को, आप कहिये कि वह दुनियावी ज़िन्दगी में उन लोगों के लिये है जिन्होंने यक़ीन किया (और) ख़ास कर के क़यामत के दिन में उन्हीं के लिये हैं, हम आयतों का इसी तरह तफ़सीली बयान कर रहे हैं उन के लिये जो इल्म रखते हैं।

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۗ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (32)

---

[1] इंसाफ़ का मतलब कुछ ने لا إله إلا الله यानी तौहीद (एकेश्वरवाद) लिया है।

[2] आयत में ज़ीनत से मुराद कपड़ा है, इस का सम्बन्ध (तआल्लुक़) भी मूर्तिपूजकों के नंगे तवाफ़ करने से है, इसलिए उन्हें कहा गया कि कपड़ा पहन के अल्लाह की इबादत करो।

[3] इस्राफ़ (हद से पार होना) किसी भी बारे में यहाँ तक कि खाने और पीने में भी ठीक नही माना गया है, एक हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो चाहो खाओ, जो चाहो पहनो, लेकिन दो बातों से बचो, इस्राफ़ और घमन्ड से।" सहीह बुख़ारी, किताबुल लिबास, बाब क़ौल अल्लाह तआला क़ुल मन हर्रम ज़ीनतल्लाह ...) कुछ सलफ़ का क़ौल है: «كلوا و اشربوا ولا تسرفوا» इस आधी आयत में सारी बीमारियों की चिकित्सा (इलाज) जमा कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ (33)

३३. आप कहिये कि मेरे रब ने सभी खुले और छिपे अशिष्ट (फ़ुहुश) बातों को हराम किया है और पाप और नाहक़ जुल्म करने को[1] और अल्लाह के साथ उसे शिर्क करने को जिसकी उस ने कोई दलील नहीं उतारी, और अल्लाह पर नामालूम बातें बोलने को।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ (34)

३४. और हर उम्मत का एक मुक़र्रर वक़्त है फिर जब उन का मुक़र्रर वक़्त आ जाये तो न एक पल की देर होगी न सवेर।

يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي ۙ فَمَنِ اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (35)

३५. हे आदम के बेटो! अगर तुम्हारे पास तुम में से मेरे रसूल (दूत) आयें जो तुम्हारे सामने मेरी आयतों को बयान करें, तो जो तक़्वा बरतेगा और सुधार कर लेगा उन पर न कोई डर होगा और न दु:खी होंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (36)

३६. और जिन्होंने हमारी आयतों को नकारा, और उन से तकब्बुर किया वही जहन्नमी हैं, वही उस में हमेशा रहेंगे।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ (37)

३७. उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिस ने अल्लाह पर झूठ बाँधा या उस की आयतों को झुठला दिया, इन को किताब से मुक़र्रर हिस्सा पहुँचेगा, यहाँ तक कि जब उन के पास हमारे फ़रिश्ते उन की जान निकालने आयेंगे तो कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाये पुकारते रहे? वे कहेंगे हम से खो गये और अपने काफ़िर (अधर्मी) होने को ख़ुद क़ुबूल कर लेंगे।

---

[1] गुनाह अल्लाह की नाफ़रमानी का नाम है, और एक हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया: "गुनाह वह है जो तेरे सीने में खटके, और लोगों को इसकी ख़बर हो जाने पर तू बुरा समझे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र) और कुछ लोग कहते हैं कि गुनाह वह है जिस का असर करने वाले तक महदूद हो और بَغْي (बग़य) वह है कि इस का असर दूसरों तक भी पहुँचें, यहाँ बग़य के साथ नाहक़ का मायेना, बिला वजह जुल्म और सख़्ती जैसे लोगों के हक़ों का हनन (ग़सब) करना, किसी का माल छीन लेना, बिला वजह मारना-पीटना और बुरा-भला और सख़्त बात कह कर बेइज़्ज़त करना वग़ैरह है।

३८. वह (अल्लाह) कहेगा कि जिन्नों और इन्सानों के उन गिरोहों के साथ जो तुम से पहले गुजर गये[1] जहन्नम में दाख़िल हो जाओ, जब कोई गिरोह दाख़िल होगा तो दूसरे को लानत करेगा, यहाँ तक कि जब उस (जहन्नम) में सभी जमा हो जायेंगे तो उनके पिछले अपने अगलों के बारे में कहेंगे कि हे हमारे रब! इन्होंने ही हम को गुमराह बनाया तू इन्हें जहन्नम की दुगनी सज़ा दे, (अल्लाह) कहेगा कि सब के लिये दुगना है लेकिन तुम नहीं जानते।

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ (38)

३९. और अगले अपने पिछलों से कहेंगे कि हम पर तुम्हारी कोई फ़ज़ीलत नहीं, इसलिए तुम भी अपने अमल के सबब अज़ाब का मज़ा लो।

وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ (39)

४०. बेशक जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से तकब्बुर किया, उन के लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जायेंगे, और वे जन्नत में दाख़िल नहीं हो पायेंगे जब तक ऊँट सूई के नाके में दाख़िल न हो जाये[2] और हम पापियों को इसी तरह बदला देते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ (40)

४१. उन के लिए जहन्नम की आग का बिस्तर होगा और उन के ऊपर उसी का ओढ़ना होगा, और हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ (41)

४२. और जो ईमान लाये और नेक काम किये, हम किसी जान को उसकी ताक़त के ऐतबार से ही उत्तरदायी (जवाबदेह) बनाते हैं, यही जन्नती हैं यही उस में हमेशा रहेंगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (42)

४३. और हम उन के दिलों के कपट को दूर कर देंगे, उन के नीचे नदियाँ बहती होंगी, और वह कहेंगे, अल्लाह के लिये सभी तारीफ़ है

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا

---

[1] उमम, उम्मत का बहुवचन (जमा) है, मुराद वह क़ौम और उम्मत है, जो कुफ़्र और विरोध (मुख़ालिफ़त) और शिर्क व झुठलाने में एक तरह होंगें।

[2] यह नामुमकिन बात है, जिस तरह ऊँट का सुई के छेद से पार होना नामुमकिन है उसी तरह काफ़िरों का जन्नत में दाख़िल होना नामुमकिन है।

لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُودُوا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ (43)

जिसने हमें इस के रास्ते पर लगाया, अगर वह हिदायत न कराता तो हम ख़ुद रास्ते पर नहीं लगते, सचमुच हमारे रब के रसूल हक़ के साथ आये, और उन से पुकार कर कहा जायेगा कि अपने अमल के बदले तुम इस जन्नत के हक़दार बना दिये गये।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ (44)

४४. और जन्नती जहन्नमियों को पुकारेंगे कि हम ने अपने रब के वादे को जो हमें दिया सच पाया, तो क्या तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया सच पाया?[1] वे कहेंगे हाँ, फिर एक पुकारने वाला उन के बीच पुकारेगा कि अल्लाह की लानत ज़ालिमों पर है।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ (45)

४५. जो अपने रब के रास्ते से रोकना और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं और वे आख़िरत का भी इन्कार करते हैं।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَنَادَوْا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ (46)

४६. और उन दोनों के बीच एक पर्दा होगा[2] और «आराफ़» पर कुछ मर्द होंगे[3] जो हर एक को उन के निशानों से पहचान लेंगे, और जन्नतियों को पुकारेंगे कि तुम पर सलामती हो, वह उस (जन्नत) में दाख़िल नहीं हो पाये

---

[1] यही बात नबी ﷺ ने बद्र के मौक़ा पर जब काफ़िर मारे गये और उन की लाशें एक कुऐं में फेंक दी गयीं, उन्हें मुख़ातब करते हुए कही: जिस पर हज़रत उमर (ؓ) ने कहा: «आप ऐसे लोगों को मुख़ातब कर रहे हैं जो मर चुके हैं।» आप ﷺ ने फ़रमाया: «अल्लाह की क़सम! मैं उन्हे जो कुछ कह रहा हूँ, वह तुम से अधिक सुन रहे हैं, लेकिन अब वे जवाब देने की ताक़त नहीं रखते।» (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्न:, बाब अरज मक्अदिल मय्यित मिनल जन्नते अविन्नारे और बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्ले अबी जहल)

[2] «इन दोनों के बीच» से मुराद जन्नत व जहन्नम के बीच या ईमानवालों और काफ़िरों के बीच है, हिजाबुन (حجاب) (आड़ या पट) से दीवार मुराद है जिस का बयान सूर: हदीद में है।

[3] यह कौन होंगे? उन के निर्धारण के लिए व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) में बहुत इख़्तिलाफ़ है, ज़्यादातर मुफ़स्सिरों का ख़्याल है कि यह वे लोग होंगे जिन के सवाब और गुनाह बराबर होंगे, उन की नेकी जहन्नम में जाने से और गुनाह जन्नत में जाने से रोकेंगे, और इस तरह अल्लाह की तरफ़ से आख़िरी फ़ैसला होने तक वह अधर में लटके होंगे।

होंगे और उसकी उम्मीद रखते होंगे।

४७. और जब उन की आँखें जहन्नमियों पर पड़ेंगी तो कहेंगे कि हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न करना।

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿47﴾

४८. और आराफ़ वाले कुछ लोगों को जिन्हें उन के निशानों से पहचानते होंगे पुकारेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा घमन्ड तुम्हारे काम नहीं आया।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُم بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿48﴾

४९. क्या यहीं हैं जिन के बारे में तुम ज़ोर देकर क़सम खा रहे थे कि इन (जन्नतियों) पर अल्लाह की रहमत[1] नहीं होगी (उन से कहा जायेगा) कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम पर कोई डर नहीं और न तुम ग़मगीन होगे।

أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۚ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿49﴾

५०. और जहन्नम के साथी जन्नत के साथियों को पुकारेंगे कि हम पर कुछ पानी डाल दो या अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़्क़ अता किया है उस में से कुछ दो, वे कहेंगे अल्लाह ने दोनों को काफ़िरों के लिये हराम कर दिया है।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۚ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿50﴾

५१. जिन्होंने अपने दीन को मनोरंजन और खेल बना लिया और दुनियावी ज़िन्दगी ने जिन को फुसला दिया, इसलिए आज हम उन्हें भूल जायेंगे, जैसे वह इस दिन को भूल गये और हमारी आयतों को नकारते रहे।

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿51﴾

५२. और हम ने उनके पास एक किताब इल्म पर मबनी तफ़सीली बयान के साथ भेज दिया है जो हिदायत और रहमत है उन के लिये जो ईमान रखते हैं।

وَلَقَدْ جِئْنَاهُم بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿52﴾

५३. क्या वह इस के आख़िरी नतीजा का इंतेज़ार कर रहे हैं?[2] जिस दिन इस का आख़िरी नतीजा

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلُهُ

[1] इस से मुराद ईमान वाले हैं जो दुनिया में ग़रीब, कंगाल, मजबूर और कमज़ोर तरह के लोग थे, जिन का मज़ाक़ बयान किये गये घमण्डी लोग उड़ाया करते थे और कहा करते थे कि अगर ये अल्लाह के प्यारे होते तो इन का दुनिया में यही हाल होता?

[2] तावील का मतलब है किसी चीज़ की हक़ीक़त और नतीजा, यानी अल्लाह की किताब के ज़रिये

يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِن قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَل لَّنَا مِن شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ (53)

आ जायेगा, तो जिन लोगों ने इस से पहले उसे भुला दिया, वह कहेंगे कि हमारे रब के रसूल हक़ ले कर आये, तो क्या कोई हमारा सिफ़ारिशी है जो हमारे लिये सिफ़ारिश कर दे? या हम दोबारा (दुनिया में) भेज दिये जाते तो उस के सिवाये अमल करते जो करते रहे, उन्होंने ख़ुद को नुक़सान में डाल दिया और जो बातें गढ़ते रहे उन से खो गईं।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ (54)

५४. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह (तआला) ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में बनाया, और फिर अर्श (सिंहासन) पर मुस्तवी हो गया।[1] वह रात को दिन से ऐसे छुपा देता है कि वह उसे तेज़ चाल से आ लेती है,[2] और सूरज व चाँद और सितारे को ताबे किया कि वे उसके मातहत हैं, सुन लो उसी की तख़लीक़ और उसी का हुक्म है, सारे जहाँ का रब बहुत मुबारक है।

वादा, तंबीह और जन्नत व जहन्नम का बयान कर दिया था, लेकिन ये उस दुनिया का नतीजा अपनी आँखों से देखने के इंतज़ार में थे तो अब वह नतीजा उन के सामने आ गया।

[1] استواء (इस्तेवा) के मतलब हैं ‹उच्च› और ‹स्थिर› होना और सलफ़ ने बिना किसी दुनियावी मिसाल और बिना किसी तुलना (तश्बीह) के यही मतलब लिए हैं, यानी अल्लाह तआला अर्श पर उच्च और स्थिर है, लेकिन किस तरह, किस हालत में, इसे हम बयान नहीं कर सकते न किसी तरह की तुलना या मिसाल ही पेश कर सकते हैं। नईम बिन हम्माद का कौल है: «जिस ने भी अल्लाह की तुलना या मिसाल किसी ख़ल्क के साथ दिया उस ने भी कुफ़्र किया, और जिस ने अल्लाह की, अपने बारे में बयान करदा बात का इंकार किया उस ने भी कुफ़्र किया।» और अल्लाह के बारे में उस की या उसके रसूल ﷺ के ज़रिये बयान की गई बात को बयान करना मिसाल नहीं है, इसलिए जो बातें अल्लाह तआला के बारे में शरीअत में बयान मिलते हैं और उन की तसदीक़ होती है उन पर बिना किसी दलील या बिना हालत जाने और बिना मिसाल के ईमान रखना ज़रूरी है। (इब्ने कसीर)

[2] حَثِيثًا (हषीषन) का मतलब है बहुत तेज़ चाल से, और मतलब है कि एक के बाद दूसरा तुरंत आ जाता है, यानी दिन का नूर आता है तो रात का अंधेरा जल्द ही ख़त्म हो जाता है और रात आती है तो दिन का नूर ख़त्म हो जाता है और दूर और नज़दीक अंधेरा छा जाता है।

५५. अपने रब को नम्रतापूर्वक (आजिज़ी) और चुपके से भी पुकारो, वह हद से बढ़ने वालों से मुहब्बत नहीं करता है।	اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿55﴾
५६. और धरती में सुधार के बाद बिगाड़ न पैदा करो और डर व उम्मीद के साथ उस की इबादत करो, बेशक अल्लाह की रहमत नेक लोगों से क़रीब है।[1]	وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿56﴾
५७. और वही अल्लाह है जो अपनी रहमत से पहले ख़ुशख़बरी के लिये हवायें भेजता है, यहाँ तक कि जब वह भारी बादलों को लाद कर लाती हैं तो हम उसे किसी सूखी धरती की ओर हाँक देते हैं, फिर उस से पानी की बारिश करते हैं फिर उस से हर तरह के फल निकालते हैं, हम इसी तरह मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम ख़्याल करो।[2]	وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاۗءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿57﴾
५८. और पाक ज़मीन अपने रब के हुक्म से अपने पौधे उपजाती है, और ख़राब (ज़मीन) बहुत कम उपज लाती है, इसी तरह हम निशानियों को कई तरह से बयान करते हैं, उन लोगों के लिए जो शुक्रिया अदा करते हैं।	وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ۭ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿58﴾
५९. हम ने नूह (ﷺ) को उन की क़ौम के पास भेजा तो उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय कोई तुम्हारा माबूद नहीं, बेशक मैं तुम पर बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ।	لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿59﴾

[1] इन आयतों में चार बातों की तालीम दी गयी है : १. अल्लाह (परमेश्वर) से रोकर और धीमी आवाज़ में दुआ की जाये, २. दुआ में ज़्यादती न की जाये यानी अपने पद और ताक़त से ज़्यादा दुआ न की जाये, ३. सुधार के बाद फ़साद न फैलाया जाये यानी अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी कर के फ़साद फैलाने में हिस्सा न लिया जाये, ४. उस के अज़ाब का डर भी दिल में हो और उस की रहमत की उम्मीद भी, इस तरह से दुआ करने वाले अच्छे इंसान हैं कि बेशक अल्लाह की रहमत उन के क़रीब है।

[2] जिस तरह से हम बारिश करके अक्सर मुर्दा ज़मीन में ज़िन्दगी पैदा कर देते हैं, और वह कई तरह के अनाज और फल पैदा करती है, उसी तरह क़यामत के दिन सभी इंसानों को जो मिट्टी में मिल कर मिट्टी हो चुके होंगे, हम दोबारा ज़िन्दा करेंगे और फिर उन का फ़ैसला करेंगे।

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿60﴾

६०. उन की क़ौम के सरदारों ने कहा कि हम आप को खुली गुमराही में देख रहे हैं।[1]

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿61﴾

६१. उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं गुमराह नही, लेकिन दुनिया के रब का रसूल हूँ।

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿62﴾

६२. तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारी भलाई कर रहा हूँ, और अल्लाह की तरफ़ से वह इल्म रखता हूँ जो इल्म तुम नहीं रखते।

أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿63﴾

६३. क्या तुम्हें तअज्जुब है कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी क़ौम के एक मर्द पर कोई नसीहत की बात आई है ताकि तुम्हें ख़बर करे, और तुम तक़्वा बरतो और ताकि तुम पर रहम की जाये।

فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿64﴾

६४. तो उन्होंने उन को झुठला दिया फिर हम ने नूह और उन के पैरोकारों को नाव में बचा लिया, और जो हमारी आयतें (निशानियाँ) नहीं माने उन्हें डुबो दिया, बेशक वह एक अंधी क़ौम थी।

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿65﴾

६५. और आद के पास उन के भाई (रसूल) हूद को भेजा[2] उन्होंने कहा, हे मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं?

[1] शिर्क (यानी मिश्रणवाद) इंसानी अक्ल को ऐसे विकार ग्रस्त (माउफ़) कर देता है कि वह सीधे रास्ते को बुरा और बुरे को सीधा रास्ता समझने लगता है, रसूल नूह की क़ौम में भी यह भ्रम पैदा हुआ, रसूल नूह जो उन्हें तौहीद की ओर बुला रहे थे (अल्लाह की पनाह) वह उन्हें गुमराह दिख रहे थे।

[2] यह आद कौम पहले आद थे जिनका घर यमन की रेतीली पहाड़ियों में था और अपनी ताक़त और क़ूवत में बेमिसाल थे, इनकी तरफ़ उन्हीं की जाति (क़ौम) के एक आदमी हज़रत "हूद" रसूल बन कर आये।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿66﴾

६६. उन के क़ौम के काफ़िर प्रमुखों (सरदारों) ने कहा, हमें तुम बेवक़ूफ़ लग रहे हो, बेशक हम तुम को झूठों मे से समझते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿67﴾

६७. उन्होंने कहा, हे मेरी क़ौम के लोगो! मुझ में बेवक़ूफ़ नहीं, लेकिन मैं दुनिया के रब का रसूल हूँ।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿68﴾

६८. मैं तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारा ईमानदार ख़ैरख़्वाह हूँ।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ۗ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿69﴾

६९. क्या तुम्हें तअज्जुब है कि तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई उपदेश (नसीहत) की बात तुम्हीं में से एक मर्द के पास आई है ताकि वह तुम्हें बाख़बर करे, तुम याद करो जब कि (अल्लाह ने) तुम्हें नूह की क़ौम के बाद उन की जगह पर कर दिया और तुम्हारी डील-डौल को ज्यादा कुशादा किया, इसलिए तुम अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि कामयाब हो जाओ।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿70﴾

७०. उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करें और अपने बुज़ुर्गों के माबूदों को छोड़ दें।[1] इसलिए तुम जिस की धमकी हमें देते हो लाओ अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۗ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۗ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿71﴾

७१. उन्होंने कहा कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब आ ही गया, क्या तुम मुझ से कुछ ऐसे नामों के बारे में झगड़ा करते हो जो तुम ने और तुम्हारे बुज़ुर्गों ने रख लिये हैं, जिन की कोई दलील अल्लाह ने नहीं उतारी है, तुम इंतेज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहा हूँ।

---

[1] **बुज़ुर्गों** की पैरवी हर ज़माने में भटकावे का सबब रही है, आद के क़ौम वालों ने भी यही **दलील** पेश किया और मूर्तिपूजा छोड़कर तौहीद का रास्ता अपनाने के लिए तैयार नहीं हुए, बदनसीबी से मुसलमानों में भी अपने बुज़ुर्गों की पैरवी का रोग आम तौर से है।

فَأَنجَيْنَٰهُ وَٱلَّذِينَ مَعَهُۥ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا ۖ وَمَا كَانُوا۟ مُؤْمِنِينَ (72)

७२. तो हम ने उसे और उस के पैरोकारों को अपनी रहमत से बचा लिया और उन लोगों की जड़ काट दी, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे ईमान वाले नहीं थे।[1]

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَٰلِحًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِۦ نَاقَةُ ٱللَّهِ لَكُمْ ءَايَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِىٓ أَرْضِ ٱللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (73)

७३. और समूद के पास उन के भाई सालेह को (भेजा), उन्होंने कहा, हे मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से सुबूत आ गया, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये निशानी है, उसे अल्लाह की धरती में खाने को छोड़ दो, उसे बुराई से हाथ न लगाना कि तुम्हें दु:खद अज़ाब पकड़ ले।

وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنۢ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ ٱلْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَٱذْكُرُوٓا۟ ءَالَآءَ ٱللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ (74)

७४. और तुम उन हालतों को याद करो जब (अल्लाह ने) तुम को आद (क़ौम) के बाद ख़लीफ़ा बनाया और धरती में तुम्हें रहने की जगह दी, तुम उसकी बराबर ज़मीन में घरों को बनाते हो,[2] और पहाड़ों को काट कर घर बनाते हो, तो अल्लाह की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो।

قَالَ ٱلْمَلَأُ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ لِلَّذِينَ ٱسْتُضْعِفُوا۟ لِمَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۚ قَالُوٓا۟ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلَ بِهِۦ مُؤْمِنُونَ (75)

७५. उन की क़ौम के घमन्डी सरदारों ने कहा अपने कमज़ोरों से जो ईमान लाये थे कि क्या तुम्हें यक़ीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुये हैं, उन्होंने कहा कि हम उस के ऊपर ईमान रखते हैं जिस के साथ उन्हें भेजा गया है।

قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا بِٱلَّذِىٓ ءَامَنتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ (76)

७६. घमन्डी सरदारों ने कहा कि तुम जिस के ऊपर यक़ीन करते हो हम यक़ीन नहीं रखते।

[1] इस क़ौम पर हवाओं का अज़ाब आया जो लगातार सात दिन आठ रातें चलता रहा और आद के लोगों की लाशें जिन्हें अपनी ताक़त पर बड़ा घमंड था खजूर के खोखले पेड़ की तरह धरती पर पड़े दिखाई दे रहे थे।

[2] इसका मतलब है कोमल धरती से मिट्टी लेकर ईंटें तैयार करते हो और उन ईंटों से महल तैयार करते हो, जैसे आज भी भट्टों पर इसी तरह मिट्टी से ईंटें तैयार की जाती हैं।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ (77)

७७. इसलिए उन्होंने ऊँटनी को क़त्ल कर दिया और अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की और कहा कि हे सालेह! अगर तुम रसूल हो तो अपनी धमकी पूरी करो।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ (78)

७८. तो उन्हें भूकम्प ने घेर लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ (79)

७९. वह (सालेह) उन से मुँह फेर कर चल दिये, और कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तुम को अपने रब का हुक्म पहुँचा दिया और तुम्हारा शुभचिंतक (ख़ैरख़्वाह) रहा, लेकिन तुम ख़ैरख़्वाहों से मुहब्बत नहीं करते।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ (80)

८०. और (हम ने) लूत को (भेजा) जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसा बुरा काम करते हो, जिसे तुम से पहले किसी ने सारी दुनिया में नहीं किया।

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ (81)

८१. तुम मर्दों के साथ सम्भोग करते हो औरतों को छोड़ कर, बल्कि तुम तो हद से गुज़र गये हो।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوهُم مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ (82)

८२. और उनकी क़ौम से कोई जवाब न बन पड़ा सिवाय इस के कि आपस में कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग बड़े पाक साफ़ बनते हैं।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ (83)

८३. तो हमने उसको (लूत) और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाय उनकी बीवी के, कि वह उन्हीं लोगों में रही जो (अज़ाब में) रह गये थे।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ (84)

८४. और हम ने उन के ऊपर एक नयी तरह की बारिश की,[1] तो देखो तो सही कि उन मुजरिमों का क्या नतीजा हुआ?

---

[1] यह ख़ास तरह की बारिश क्या थी? पत्थरों की बारिश, जिस तरह से दूसरी जगह पर फ़रमाया है :

﴿وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ﴾

"हम ने उन पर तह पर तह पत्थरों की बारिश बरसायी।" (सूर: हूद-८२)

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (85)

८५. और (हम ने) मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को (भेजा)[1] उन्होंने कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी ओर वाज़ेह निशानी आ चुकी है, बस तुम नाप-तौल पूरा-पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम कर के न दो[2] और सारी धरती पर इसके बाद कि सुधार कर दिया गया फ़साद मत फैलाओ, यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद है अगर तुम ईमान ले आओ।

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ (86)

८६. और तुम हर एक रास्ते पर उन्हें धमकी देने और अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये न बैठा करो, और उस में ग़लती की खोज करते हुए, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें ज़्यादा कर दिया, फिर देखो कि फ़सादियों का अंजाम कैसा रहा।

وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ (87)

८७. और अगर तुम में से कुछ लोगों ने उस हुक्म पर यक़ीन किया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ, और कुछ ने यक़ीन नहीं किया है तो थोड़ा सब्र रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है।

---

[1] मदयन हज़रत इब्राहीम के बेटे और पोते का नाम था, फिर उन्हीं के वंश से सम्बन्धित क़बीले का नाम भी मदयन और जिस बस्ती में वे रहते थे उसका नाम भी मदयन पड़ा गया, इस तरह इस को क़बीले और बस्ती दोनों के लिए बोला जाता है, यह बस्ती हिजाज़ इलाक़े के रास्ते में मआन के क़रीब है, इन्हीं को क़ुरआन में दूसरे मुक़ाम पर أصحاب الأيكة (वन के निवासी) भी कहा गया है, उनकी तरफ़ हज़रत शुऐब नबी बनाकर भेजे गये। देखिये (सूर: अश-शुअरा-१७६)

टिप्पणी : हर नबी को उन की क़ौम का भाई कहा गया है, जिसका मतलब उसी क़ौम और जाति का एक इंसान है, जिसको कुछ जगह पर رسولاً منهم या من أنفسهم भी कहा गया है, और मतलब उन सब का यही है कि रसूल और नबी इंसानों में से ही एक इंसान होता है जिसे अल्लाह तआला लोगों की हिदायत के लिए चुन लेता है और वह्यी के ज़रिये उस पर अपनी किताब और अहकाम उतारता है।

[2] तौहीद की दावत के बाद उस क़ौम में नाप-तौल की कमी एक बड़ी कमी थी, जिस से रोका गया और पूरा-पूरा नाप तौल कर देने की तालीम दी गई, यह बुराई भी बहुत भयानक है जिस से उस क़ौम के नैतिक (अख़लाक़ी) गिरावट का पता लगता है जिस में यह बुराई पाई जाती है, यह बुरी ख़्यानत है कि पैसे तो पूरे लिये जायें और चीज़ कम दी जाये, इसलिए सूर: मुतफ़्फ़िफ़ीन में ऐसे ही लोगों के लिए तबाही की ख़बर दी गई है।